संत रविदास : दार्शनिक विचार

डा0 शिप्रा वर्मा,
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
डा0 बी0 आर0 अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,
अनौंगी, कन्नौज

सारांश

संत रविदास भक्त कवि थे। उन्होने अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया। उनका काव्य जनसाधारण को सीधे–सीधे समझ में आने वाला था। हालांकि इन्होने किसी दार्शनिक ग्रन्थ को लिखकर कोई सम्प्रदाय नहीं चलाया लेकिन दर्शन अर्थात दृष्टि के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है वह उनके काव्य में अवश्य मिलता है। दर्शन का स्वरूप विभिन्न तत्कालीन समस्याओं तथा चिन्तन पद्वतियों के परस्पर संघर्ष के परिणामस्वरूप निश्चित होता है। दर्शन का सम्बन्ध जीवन संघर्षों से होता है और रैदास की जीवन दृष्टि मानवतावादी द्वष्टिकोण को निर्धारित करती है। जगत और जीवन के सत्य को स्वीकार करते हुए ही उन्होने अपने काव्य में भगवत कृपा की इच्छा रखी है और यही रैदास का दर्शन भी है।

रविदास को संतों की श्रेणी में रखा जाता है। संत शव्द त्यागी पुरूषों, सद्चरित्र व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है। वह संसार में रहते हुए भी मोह माया आदि से दूर रहता है। संत रैदास भी निगुर्णोपासक संत थे। ये संत भिक्षा माँगकर नहीं अपितु परिश्रम करके अपना जीवकोपार्जन करते थे। रविदास भी अपने कर्म में प्रवृत्त रहते हुए भगवत भक्ति करते थे–

"रविदास है निज हत्यहि, राखो शंपी आर।
सुकिरित ही मम धरम् है, तारेगा भव पार।।" [1]

तात्पर्य है कि अपने हाथों से जूते बनाने का कर्म करना ही मेरा धर्म है। इसी से मेरा जीवन निर्वाह होता है और ईश्वर सब देखता है वह ही मुझे पार उतारेगा।

संत रविदास केवल दार्शनिक ही नहीं अपितु भक्त कवि हैं। उन्होने अपने काव्य में सामाजिक बुराईयों को भी चित्रित किया है। उनके कथानुसार संसार की सभी वस्तुए चाम की हैं। वे स्पष्टवादी कवि थे और यही उनके व्यक्तित्व की बड़ी विशेषता थी। उन्होने श्रम को ही ईश्वर का रूप माना है–

"रविदास श्रम करि खाई ही, जब लग पार बसाय।
नेक कमाई जउ करई, कभहुं न निष्फल जाय।।" [2]

संत रविदास एक सच्चे भक्त कवि थे और इसी कारण वे प्राणी मात्र मे ईश्वर का वास मानते थे। समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों को उन्होने नकारा। डा0 धर्मपाल मैनी ने लिखा है "उन्होने जातिगत कट्टरता एवं धार्मिक सम्प्रदाय में फंसी जनता को मानवता का पाठ पढाया।" [3]

रैदास का दर्शन परम सत्य अर्थात ब्रह्म पर आधारित है। वे दार्शनिक चिन्तको की भांति किसी दर्शन विशेष के प्रतिपादक नहीं थे।

भारतीय दर्शन व्यवहारिक दर्शन है। प्रो0 मैक्समूलर ने भारतीय दर्शन के लिए लिखा है "भारत में दर्शन का अध्ययन मात्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं वरन् जीवन के चरम् उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किया जाता था। [4]

रविदास के पास कोई पुस्तकीय ज्ञान तो नहीं था किन्तु अपने अनुभव और सहज ज्ञान को ही इन्होने अपने दर्शन और अध्यात्म का आधार बनाया। कबीर की भांति इन्होने भी 'मसि कागद् ग्हयो नहीं ' की उक्ति को चरितार्थ किया और जीवन के व्यवहारिक ज्ञान को ही सर्वोपरि माना। अतः इनका दार्शनिक चिन्तन व्यवहारिक जीवन से ही सम्बद्व है।

रविदास का मानना था कि मनुष्य का चरित्र और आचार ही सबसे बड़ा होता है और दर्शन तत्कालीन समस्याओं और चिन्तन पद्वति पर ही आधारित होता है। अपने इसी मानवतावादी दृष्टिकोण को उन्होने अपने दर्शन का आधार बनाया–

"जाति पाति का नहीं अधिकारा, भजन कीनै उतरै पारा।
वेद पुरान कहै दुहु बानि, भगति बसी है सारंगपाणि।।" [5]

रैदास का दर्शन ब्रह्म, जीव, जगत और माया संबंधी विचारो के आधार पर निरूपित किया जा सकता है। ब्रहम से ही सभी जीव उत्पन्न होते हैं और उसी मे एकाकार हो जाते हैं। उन्होने ब्रह्म को सर्वत्र व्याप्त बताया है। "रविदास ने राजा राम को गोविन्द, हरि, वासुदेव, नारायण, कृष्ण, माधव, कृपानिधि, दीनदयाल आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया है कवि ने राम और कृष्ण दोनों रूपों को अभिन्न माना है। उनका ब्रह्म–'सबमें हरि है, हरि में है सब, हरि अपनो जिन जाना' है। [6]

इसके पश्चात तत्व आत्मा है। आत्मा एक अविनाशी तत्व है जो शरीर रूपी पिंजड़े में कैद रहती है और जब यह बंधन छूटता है तभी आत्मा ही अनेक रूपों में विस्तार पाती है–

"रविदास पाव इक सकल घट बाहर भीतर सोई।
सब दिसी देखंउ पीव–पीव दूय नाहि कोई।।" [7]

मनुष्य का शरीर नाशवान है और आत्मा अजर अमर एवं न नष्ट होने वाला तत्व है।

संत रविदास के दर्शन में तत्व जीव भी है। जीव चेतन स्वरूप होता है लेकिन शरीर बद्व होने के कारण वह विषय वासनाओं में जकडा रहता है और भक्ति के मार्ग पर चलकर ही वह उस परम सत्य के दर्शन पा सकता है। रविदास के अनुसार ब्रह्म और जीव का परस्पर सम्बंध सोने और कुण्डल, जल और तरंग, पत्थर और प्रतिमा, सूत और कपडा जैसा है–

"माधौ भ्रम कैसे न विलाई, तीर्थ दुति दरसै आई।
कनक कुटक, सूत पट जुदा, रज भुअंग भ्रम जैसा।
जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यों, ब्रह्म जीव दुति ऐसा।" [8]

दार्शनिक चिन्तन में जगत तत्व की चर्चा भी अवश्य की जाती है। ब्रह्म को सत्य और जगत को मिथ्या माना जाता है। इस जगत में रहकर ही जीव मिथ्या आडम्बरों में पड़ जाता है और मुक्ति प्राप्त न कर पाने के कारण ब्रह्म से एकाकार नहीं हो पाता। जगत की नश्वरता को रविदास जी ने इस रूप में व्यक्त किया है–

'बाजी झूठ सांचि बाजीगर जाना तन पतियाना।' [9]

रविदास ने जगत को जहाँ एक ओर मिथ्या माना है वहीं दूसरी ओर उसे कर्मक्षेत्र भी स्वीकारा है। माया मोह से बचते हुये हमें अपने कर्म में प्रवृत्त रहना चाहिये। रविदास भी अपना जूते बनाने का कार्य करते हुये ही भक्ति में लीन रहते थे।

रविदास का दर्शन माया तत्व की निस्सारता को भी स्वीकार करता है। माया ने ही जीव को विषय–वासनाओं में लिप्त कर रखा है। यही सारे जगत को भ्रमित बनाये रखती है। संत रविदास कहते है कि साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है। इसके सामने तो विद्वान और तपस्वी भी नहीं टिक पाते–

"बरजी हो बरजि बीठले, माया जग खाया।
महाप्रबल सबही सनही सनये, सूर नर मुनि भरमाया।
जेगी जतो, तपी सन्यासी, पंडित रहन न पावै।।"
[10]

अंतिम तत्व मोक्ष है। जब आत्मा परमात्मा (ब्रह्म) में एकाकार हो जाती है और माया के बंधन को तोडकर संसार के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर लती है अर्थात तर्पण प्राप्त कर लेती है तो वह स्थिति मोक्ष की होती है। रविदास मनुष्य को संसार (भवसागर) से पार होने का एक मात्र मार्ग भक्ति को बताते हैं–

"जब लग नदी न समुद्र समावै, तब लगि बढ़े हंकारा।

जब मन मिल्यो राम सागर सों, तब यह मिटी पुकारा।।" [11]

अतः संत रविदास ने दर्शन पर अपना पूर्ण ज्ञान दर्शाया है। उन्होने दर्शन को जीवन दर्शन माना है। इनका दर्शन सीधा–सरल है। जहाँ अन्य दार्शनिक चिंतकों के विचार को समझना आसान नहीं वहीं इनका दर्शन आम जनसाधारण को समझ में आने वाला है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- गुरू रविदास, आचार्य पृथ्वी सिंह : पृ0 119
- संत शिरोमणि गुरू रविदास, सुमन कुंकल ; ह. रविवासरीय दैनिक ट्रिब्युन , 31.1.1988
- संत रविदास वाणी , डा0 कुसुमबाला शेरवाल : पृ0 38
- सिक्स सिस्टम और इण्डियन फिलासफी , प्रो0 मैक्समूलर , पृ0 370
- सतगुरू रविदास वाणी , डा0 वी0 पी0 शर्मा : पृ0 23
- सतगुरू रविदास वाणी , बेनी प्रसाद शर्मा : पृ0 69
- रविदास दर्शन , श्री पृथ्वी सिंह आजाद : साखी 10
- युग प्रर्वतक संत रविदास गुरू , आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद : पृ0 98
- संत रविदास और उनका काव्य पद , स्वामी रामानंद शास्त्री : पद 10
- संत स्वामी रविदास जी और उनका काव्य , स्वामी रामानंद शास्त्री : पद 32
- हिन्दी की निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठ भूमि ,गोविन्द त्रिगुणायत : पृ0 144

Copyright © 2017 *Dr. Shipra Verma*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.